



44 साल बाद भारतीय महिला हॉकी का स्वर्णिम लौटना, चीन को 1-0 से हराकर रचा इतिहास



भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com

काकाभिगहारा, जापान, 2 अक्टूबर 2026। भारतीय महिला हॉकी टीम ने एशियन गेम्स 2026 में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए मौजूदा चौपिचन चीन को 1-0 से हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ भारतीय टीम ने 44 वर्ष बाद एशियाई खेलों में महिला हॉकी का स्वर्ण फिर हासिल किया। वर्ष 1982 के बाद यह भारत का इस स्पर्धा में दूसरा स्वर्ण पदक है। फाइनल मुकाबले में भारत की जीत की नींव 10वें मिनट में रखी गई, जब लालरेडिसियांगी ने शानदार रिवर्स-स्टिक हिट के जरिए गोल कर टीम को 1-0 की बढ़त दिलाई। उनका यह गोल निर्णायक साबित

हुआ। लालरेम्सियामी के लिए यह मुकाबला इसलिए भी विशेष रहा क्योंकि यह भारत के लिए उनका 200वां अंतरराष्ट्रीय मैच था। लालरेम्सियामी का निर्णायक प्रहार मुकाबले की शुरुआत में चीन ने गेंद पर नियंत्रण बनाने और भारतीय सर्किल में प्रवेश करने की कोशिश की, लेकिन भारतीय टीम ने शुरुआती दबाव को संभालते हुए मौके तलाशे। 10वें मिनट में भारत को वह अवसर मिला, जिसे लालरेम्सियामी ने गोल में बदल दिया। भारतीय आक्रमण के दौरान मिले अवसर को लालरेम्सियामी ने तेज रिवर्स हिट में तब्दील किया और गेंद चीनी गोलकीपर को छकाते हुए नेट में पहुंच गई। इस गोल ने भारत को शुरुआती बढ़त दिलाई और मुकाबले की दिशा तय कर दी। सविता पूनिया का शानदार बचाव भारत की बढ़त के बाद चीन ने लगातार आक्रमण तेज किए। दूसरे क्वार्टर में भारतीय गोल पर दबाव बढ़ा और चीन को बराबरी का सुनहरा मौका पेनल्टी स्ट्रोक के रूप में मिला। भारतीय गोलकीपर सविता पूनिया ने इस मौके पर बेहतरीन बचाव करते हुए चीन को बराबरी करने से रोक दिया। सविता के इस बचाव ने भारत की 1-0 की बढ़त को कायम रखा। इसके बाद भी चीन ने कई बा

भारतीय डिफेंस को चुनौती दी, लेकिन भारतीय खिलाड़ियों ने गोल क्षेत्र में संघम और अनुशासन बनाए रखा। दबाव के बीच मजबूत रहा भारतीय डिफेंस दूसरे और तीसरे क्वार्टर में चीन ने भारतीय रक्षा पंक्ति पर लगातार दबाव बनाया। पेनल्टी कॉर्नर और सर्फिल में लगातार प्रवेश के बावजूद भारतीय डिफेंस ने चीनी खिलाड़ियों को गोल करने का स्पष्ट अवसर नहीं दिया। भारतीय टीम ने कई महत्वपूर्ण ब्लॉक और क्लियरेंस किए। मैच के अंतिम चरण में चीन ने बराबरी के लिए अतिरिक्त आक्रामक रणनीति अपनाई और गोलकीपर को हटाकर अतिरिक्त आउटफील्ड खिलाड़ी को मैदान पर उतारा। इसके बावजूद भारतीय रक्षा पंक्ति ने आखिरी सीटी तक बढ़त बनाए रखी। 1982 के बाद फिर एशियाई स्वर्ण भारतीय महिला हॉकी टीम ने 1982 में नई दिल्ली एशियन गेम्स में पहली बार स्वर्ण पदक जीता था। इसके बाद भारत कई बार खिलाव के करीब पहुंचा, लेकिन स्वर्ण हासिल नहीं कर सका। 1998 और 2018 में भारतीय टीम को रजत पदक से संतोष करना पड़ा था। 2026 में चीन के खिलाफ मिली जीत ने 44 वर्ष के इस इंजंजर को समाप्त कर दिया। इसके साथ भारत

ने महिला हॉकी में अपना दूसरा एशियन गेम्स स्वर्ण पदक हासिल किया। लॉस एंजिल्स ओलंपिक का टिकट भी पक्का एशियन गेम्स का यह स्वर्ण भारतीय महिला हॉकी टीम के लिए केवल पदक तक सीमित उपलब्धि नहीं है। इस जीत के साथ भारत ने 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक के लिए सीधे क्वालिफिकेशन भी हासिल कर लिया है। इससे भारतीय टीम को अगले ओलंपिक के लिए अलग क्वालीफाइंग प्रतियोगिता के जरिए स्थान हासिल करने की जरूरत नहीं होगी। एशियाई खिताब ने भारतीय महिला हॉकी के लिए अगले ओलंपिक चक्र की राह भी स्पष्ट कर दी है। एक गोल, मजबूत रक्षा और ऐतिहासिक स्वर्ण चीन के खिलाफ फाइनल में भारत की जीत सामूहिक प्रदर्शन का परिणाम रही। लात सप्रेमियामी का निर्णायक गोल, सविता पुनिया का पेनल्टी स्ट्रोक बचाव और पूरी टीम की रक्षात्मक दृढ़ता ने भारत को ऐतिहासिक सफलता दिलाई। 44 वर्ष के लंबे अंतराल के बाद भारतीय महिला हॉकी टीम ने एशियन गेम्स में फिर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इस जीत के साथ भारत ने न केवल महाद्वीपीय खिताब हासिल किया, बल्कि लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक के लिए भी अपना स्थान सनिश्चित कर लिया।

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
निशिन, 3 अक्टूबर 2026। एशियन
गेम्स 2026 के पुरुष क्रिकेट फाइनल
में भारत ने पाकिस्तान को 19 रन से
हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम कर
लिया। निशिन के कोरोनागी स्पोर्ट्स



पार्क में खेले गए रोमांचक मुकाबले में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट पर 211 रन बनाए। जबकि ने पाकिस्तान की टीम 20 ओवर में 6 विकेट पर 192 रन ही बना सकी। इस जीत के साथ भारतीय पुरुष टीम ने एशियन गेम्स में लगातार दूसरी बार स्वर्ण पदक हासिल किया। अभिषेक ने दी तेज शुरुआत, तिलक ने संभाला मोर्चा बॉलरों के कप्तान श्रेयस अय्यर ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। सलामी

बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने शुक्रआस से ही आक्रामक रुख अपनाते हुए 28 गेंदों पर 61 रन की तेजतर्रार पारी खेली। उनकी पारी में तीन चौके और सात छक्के शामिल रहे। कप्तान श्रेयस अय्यर ने 21 और ईशान किशन ने 20 रन का योगदान दिया।

अंतिम चरण में तिलक वर्मा ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए महज 22 गेंदों पर नाबाद 51 रन बनाए। शिवम दुबे ने भी 27 रन की उपयोगी पारी खेली। इन पारियों की बदौलत भारत ने 20 ओवर में 211 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया, जो इस टूर्नामेंट में पुरुष क्रिकेट का सबसे बड़ा स्कोर भी रहा।

हसन नवाज की 96 रन की पारी भी नहीं दिला सकी जीत।

212 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी पाकिस्तान की शुरुआत अपेक्षा के अनुरूप नहीं रही। हालांकि हमन नवाज ने शानदार संघर्ष करते हुए 51 गेंदों पर 96 रन बनाए और मुकाबले को आँसि चरण तक रोमांचक बना रखा। उन्हें दूसरे छोर से पर्याप्त साझेदारी नहीं मिल सकी और पाकिस्तान की टीम निर्धारित 20 ओवर में 192 रन तक ही पहुँच सकी। भारतीय गेंदबाजों ने महत्वपूर्ण मौकों पर विकेट निालकर पाकिस्तान पर दबाव बनाए रखा

लक्ष्य बड़ा होने के बावजूद पाकिस्तान की टीम अंतिम ओवरों में जरूरी रन गति हासिल नहीं कर सकी और भारत ने 19 रन से मुकाबला अपने नाम कर लिया। एशियन गेम्स में लगातार दूसरी बार स्वर्ण इस जीत के साथ भारत ने पुरुष क्रिकेट में अपना दूसरा लगातार एशियन गेम्स स्वर्ण पदक हासिल किया। इससे पहले 2022 हांगझोउ एशियन गेम्स में भी भारतीय पुरुष टीम ने स्वर्ण पदक जीता था।

ज्ज के अनुसार, भारत दोनों संस्करणों में पुरुष क्रिकेट का मौजूदा चैंपियन रहा है। क्रिकेट में भारत का गोल्डन डबल एशियन गेम्स 2026 में भारतीय महिला क्रिकेट टीम भी स्वर्ण पदक जीत चुकी है। हरमनप्रीत कौर की अगुवाई वाली भारतीय महिला टीम ने 22 सितंबर को श्रीलंका को 147 रन से हराकर लगातार दूसरी बार महिला क्रिकेट का स्वर्ण जीता था। इस तरह मौजूदा एशियन गेम्स में भारत ने पुरुष और महिला दोनों क्रिकेट स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक अपने नाम किया। पुरुष फाइनल में भारत की जीत ने एशियन गेम्स के क्रिकेट अभियान को स्वर्णिम अंत दिया। बल्लेबाजी में अमिषेक शर्मा और तिलक वर्मा की पारियों तथा गेंदबाजों के सामूहिक प्रदर्शन ने भारत को खिताब बरकरार रखने में अहम भूमिका निभाई।

यूक्रेन युद्ध पर पुतिन का बड़ा बयान, बोले- मोदी के पास समाधान के अच्छे विचार

भारतथ खबर
Bhaaraataarth.com

संवाददाता अशोक कुमार सिंह
नई दिल्ली, 3 अक्टूबर 2026।

रूस-यूक्रेन संघर्ष के बीच रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शांति प्रयासों और संघर्ष के समाधान के लिए उनके विचारों का सार्वजनिक रूप से उल्लेख किया है। पुतिन ने कहा कि मोदी लगातार यूक्रेन संघर्ष को समाप्त करने का मुद्दा उठाते हैं और उनके पास दोनों पक्षों के लिए स्वीकार्य समाधान तलाशने के संबंध में बहुत अच्छे विचार हैं। वाल्टाई मंच से मोदी के प्रयासों का जिक्र पुतिन ने यह टिप्पणी वाल्टाई इंटरनेशनल डिस्कशन क्लब की वार्षिक बैठक में की। उन्होंने कहा कि रूस और भारत के बीच अच्छे और मैत्रीपूर्ण संबंधों के बावजूद प्रधानमंत्री मोदी यूक्रेन संघर्ष को समाप्त करने की आवश्यकता का मुद्दा लगातार उठाते रहे हैं। रूसी राष्ट्रपति के अनुसार, मोदी इस विषय में रुचि रखते हैं और संघर्ष का ऐसा समाधान तलाशने के विचार रखते हैं, जिसे दोनों पक्ष स्वीकार कर सकें।

पुतिन ने मोदी की शांतिपूर्ण समाधान की इच्छा के लिए उनका आभार भी व्यक्त किया। भारत का जोर संवाद और कूटनीति पर भारत लंबे समय से रूस-यूक्रेन संघर्ष के समाधान के लिए संवाद और कूटनीति की आवश्यकता

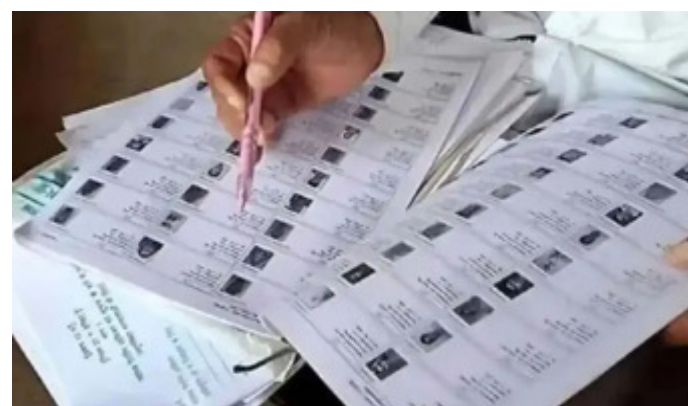


पर जोर देता रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने विभिन्न मौकों पर युद्ध समाप्त करने और शांतिपूर्ण समाधान तलाशने की बात कही है। ताजा टिप्पणी से पहले भी मोदी और पुतिन के बीच यूक्रेन संघर्ष को लेकर बातचीत होती रही है। दोनों नेताओं की 31 अगस्त को बिश्केप में शंघाई सहयोग संगठन (SCO) बैठक के दौरान और सितंबर में नई दिल्ली में BRICS शिखर सम्मेलन



पर जोर देता रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने विभिन्न मौकों पर युद्ध समाप्त करने और शांतिपूर्ण समाधान तलाशने की बात की है। ताजा टिप्पणी से पहले भी मोदी और पुटिन के बीच यूक्रेन संघर्ष को लेकर बातचीत होती रही है। दोनों नेताओं की 31 अगस्त को बिस्केक में शंघाई सहयोग संगठन (SCO) बैठक के दौरान और सितंबर में नई दिल्ली में BRICS शिखर सम्मेलन

के दौरान मुलाकात हुई थी। पुतिन के बयान का क्या अर्थ है? पुतिन की टिप्पणी को रूस की ओर से प्रधानमंत्री मोदी के संवाद और शांति प्रयासों के प्रति सार्वजनिक प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि, यह बयान किसी नए युद्धविराम, शांति समझौते या औपचारिक वार्ता की घोषणा नहीं है। रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष का स्थायी समाधान दोनों पक्षों के बीच बातचीत, सुझाव संबंधी मुद्दों और व्यापक राजनीतिक सहमति पर निर्भर करेगा। इसलिए पुतिन के बयान को मौजूद कूटनीतिक प्रयासों के संदर्भ में देखना अधिक उचित होगा। भारत की भूमिका पर बनी निगाहें यूक्रेन संघर्ष के समाधान के लिए भारत की स्थिति पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नजर रही है। भारत ने अपने रूस और पश्चिमी देशों सहित विभिन्न पक्षों के साथ संबंधों के आधार पर संवाद और कूटनीतिक प्रयासों के समर्थन की बात कही है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भी 3 अक्टूबर को भारत-रूस संबंधों पर हुई संसदीय परामर्श बैठक में संघर्ष समाप्त करने के लिए संवाद और कूटनीतिक समर्थन को दोहराया।



भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
नई दिल्ली, 3 अक्टूबर 2026।
विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) के
दौरान मतदाता सूची से छूट गए पात्र
नागरिकों और पहली बार मतदाता
बनने वाले युवाओं के लिए निर्वाचन
आयोग ने महत्वपूर्ण कदम उठाया है।
आयोग ने उन 20 लाखों और केंद्र
शासित प्रदेशों के विदेश अभियान चलाने
के निर्देश दिए हैं जहां SIR की प्रक्रिया
पूरी हो चुकी है। इस अभियान का
उद्देश्य ऐसे पात्र मतदाताओं को मतदाता
सूची में शामिल करना है, जिनका
नाम किसी कारण से सूची में नहीं आ
सक। निर्वाचन आयोग ने यह निर्देश

29 सितंबर को राज्यो के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों को भेजे पत्र में दिए थे। इसके बाद गुरुवार को मुख्य निर्वाचन अधिकारियों के साथ हुई वीडियो कॉन्फ्रेंस में भी इन निर्देशों को दोहराया गया। आयोग ने स्पष्ट किया कि **SIR** पूरा होने के बाद पात्र व्यक्ति मतदाता सूची में नाम शामिल कराने के लिए सामान्य फॉर्म-6 का इस्तेमाल कर सकते हैं। **SIR** के दौरान इस्तेमाल किया गया अतिरिक्त घोषणा-पत्र अब इस प्रक्रिया के लिए आवश्यक नहीं होगा। पहले और बाद की मतदाता सूची की होगी तुलना निर्वाचन अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे **SIR** से पहले और उसके

क्रैश एक्स से किया वार 17 वर्षीय कुमकुम मोहोड़ ने रचा इतिहास, शूट-ऑफ में स्वर्ण से भारत का नाम रोशन

भारतार्थ खबरBhaarataraarth.
com
आइची-नागोया, 3 अक्टूबर
2026। भारत की 17 वर्षीय तीरंदाज
कुमकुम मोहोड़ ने एशियाई खेल 2026
में महिला व्यक्तिगत रिक्त स्पर्धा का
स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच
दिया। जापान में शनिवार को खेले
गए रोमांचक फाइनल में कुमकुम ने
दक्षिण कोरिया की ओ येजिन
शूट-ऑफ में हराया। निर्धारित पांच
सेट के बाद दोनों तीरंदाज 5-5 की
बराबरी पर थीं, जिसके बाद निर्णायक
शूट-ऑफ में कुमकुम ने परफेक्ट 10
अंक हासिल किए, जबकि ओ येजिन
8 अंक ही बना सकीं। दबाव के बीच
शानदार वापसी फाइनल की शुरुआत
कुमकुम के लिए चुनौतीपूर्ण रही। ओ
येजिन ने पहला सेट 29-27 से अपने
नाम किया और दूसरे सेट के 29-29
से बराबर रहने के बाद बढ़त बनाए
रखी। इसके बाद कुमकुम ने तीसरे

सेट में लगातार तीन 10 अंक हासिल कर मुकाबले को 3-3 की बराबरी पर ला दिया। चौथे सेट के बाद दक्षिण



कोरियाई तीरंदाज ने 5-3 की बढ़त बना ली, लेकिन निर्णायक पांचवें सेट में कुमकुम ने एक बार फिर संयम दिखाया और तीनों तीरों पर 10 अंक हासिल करते हुए सेट जीत लिया। मुकाबला 5-5 पर पहुंचा और स्वर्ण पदक का फैसला शूट-आफ से हुआ।

शूट-आफ में सटीक निशाने से स्वर्ण निर्णायक क्षण में कुमकुम ने दबाव के बीच सटीक निशाना साधते हुए 10 अंक हासिल किए। ओर्येंजिन तीर 8 अंक पर लगा। इस एक निशाने ने भारत के ख़ाते में ऐतिहासिक स्वर्ण पदक डाल दिया। इस जीत के साथ कुमकुम एशियाई खेलों में महिला व्यक्तिगत रिकॉर्ड स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बन गईं। आधिकारिक ओलंपिक रिपोर्टों अनुसार, इस उपलब्धि के साथ भारत ने लॉस एंजेलिस 2028 ओलंपिक के लिए तीरंदाजी में एक कोटा स्थान भी हासिल किया है। यह कोटा भारत के नाम है, किसी व्यक्तिगत खिलाड़ी के नाम नहीं।

सेमीफाइनल में भी दिखाया दम स्वर्ण पदक मुकबले से पहले कुमकुम ने सेमीफाइनल में चीन की जिंगयी डू को 6-2 से हराकर फाइनल में प्रवेश

किया था। इस जीत के साथ उन्होंने महिला व्यक्तिगत रिकर्व में भारत के लिए कम से कम रजत पदक सुनिश्चित कर लिया था। फाइनल में उन्होंने उस प्रदर्शन को स्वर्ण पदक में बदल दिया। एशियाई खेलों में कुमकुम का शानदार अभियान कुमकुम का यह एशियाई खेल अभियान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। व्यक्तिगत रिकर्व स्वर्ण से पहले वह भारतीय महिला रिकर्व टीम का हिस्सा रह चुकी हैं, जिसने अंकिता भक्त और कीर्ति शर्मा के साथ टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता था। इस तरह प्रतियोगिता में उनके खाते में एक से अधिक पदक जुड़ चुके हैं। 17 वर्ष की उम्र में एशियाई खेलों में व्यक्तिगत रिकर्व वर्ग में स्वर्ण जीतना भारतीय तीरंदाजी के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। कुमकुम की यह सफलता न केवल मौजूदा प्रतियोगिता में भारत के पदक अभियान को मजबूती देती है।

सम्पादकीय

एशियन गेम्स में भारत का प्रदर्शन: पदकों से

आगे खेल व्यवस्था की असली परीक्षा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com एशियन गेम्स में पदक जीतना किसी भी देश के लिए गर्व का विषय होता है। भारत के लिए भी एशियन गेम्स 2026 में खिलाड़ियों का प्रदर्शन उत्साह बढ़ाने वाला है। 3 अक्टूबर को भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम ने पाकिस्तान को 19 रन से हराकर स्वर्ण पदक जीता, जबकि 17 वर्षीय कुमकुम मोहोड़ ने महिला व्यक्तिगत रिकर्व तीरंदाजी में ऐतिहासिक स्वर्ण अपने नाम किया। भारतीय खिलाड़ियों की इन उपलब्धियों ने देश में खेलों को लेकर उत्साह को एक बार फिर नई ऊर्जा दी है। लेकिन किसी भी बड़े खेल आयोजन के बाद केवल पदकों की संख्या गिनना पर्याप्त नहीं है। असली सवाल यह है कि इन सफलताओं को एक मजबूत और टिकाऊ खेल व्यवस्था में कैसे बदला जाए। क्या भारत ऐसी व्यवस्था तैयार कर सकता है जिसमें किसी खिलाड़ी की सफलता केवल उसकी व्यक्तिगत



प्रतिभा और संघर्ष पर निर्भर न रहे, बल्कि उसे बचपन से लेकर अंतरराष्ट्रीय मंच तक लगातार प्रशिक्षण, संसाधन, वैज्ञानिक सहायता और प्रतिस्पर्धी अवसर मिलते रहें? पदक उपलब्धि हैं, मंजिल नहीं। एशियन गेम्स में मिलने वाला हर पदक वर्षों की मेहनत का परिणाम होता है। खिलाड़ी के साथ परिवार, प्रशिक्षक, फिजियोथेरेपिस्ट, खेल वैज्ञानिक और अनेक सहयोगी भी इस यात्रा का हिस्सा होते हैं। इसलिए पदक को केवल अंतिम परिणाम के रूप में नहीं, बल्कि पूरी खेल प्रणाली के प्रदर्शन के एक संकेतक के रूप में देखना चाहिए। भारत के सामने चुनौती यह है कि कुछ खेलों और कुछ खिलाड़ियों की सफलता को व्यापक आधार दिया जाए। तीरंदाजी, कुश्ती, निशानेबाजी, मुक्केबाजी, हॉकी, एथलेटिक्स और अन्य खेलों में उभर रही प्रतिभाओं को लगातार अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का अनुभव मिले। इससे किसी एक पीढ़ी की उपलब्धि अगली पीढ़ी के लिए मजबूत आधार बन सकती है। असली बदलाव गांव और स्कूल से शुरू होगा। भारत में खेल प्रतिभा की कमी नहीं है। बड़ी चुनौती प्रतिभा को समय रहते पहचानने और उसे उचित प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की है। छोटे शहरों, कस्बों और गांवों में अनेक बच्चे खेलों में क्षमता रखते हैं, लेकिन सुविधाओं, प्रशिक्षकों और प्रतियोगिताओं तक उनकी पहुंच सीमित हो सकती है। भारतीय खेल प्राधिकरण की मौजूदा व्यवस्थाओं में जमीनी स्तर से प्रतिभा खोजने, प्रशिक्षण केंद्रों और वैज्ञानिक सहायता देने की व्यवस्था शामिल है। सरकार की संशोधित खेलो इंडिया योजना 2026–31 में भी प्रतिभा पहचान, खेल अवसरंचना, प्रशिक्षण, खेल विज्ञान और खिलाड़ियों को दीर्घकालिक सहायता के बीच बेहतर समन्वय पर जोर दिया गया है। यही वह क्षेत्र है जहां नीतियों का वास्तविक असर दिखाई देना चाहिए। केवल बड़े शहरों में आधुनिक स्टेडियम बनाना पर्याप्त नहीं होगा। जिला और ब्लॉक स्तर पर मैदान, प्रशिक्षित कोच, खेल सामग्री, चिकित्सा सुविधा और नियमित प्रतियोगिताएं उपलब्ध कराना भी उतना ही जरूरी है। आधुनिक खेल केवल शारीरिक क्षमता का मुकाबला नहीं रह गया है। खिलाड़ियों के प्रदर्शन में पोषण, चोट से बचाव, रिकवरी, मनोवैज्ञानिक तैयारी, बायोमैकेनिक्स और डेटा विश्लेषण जैसी व्यवस्थाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए भारत को खिलाड़ियों के साथ—साथ प्रशिक्षकों और खेल विशेषज्ञों की गुणवत्ता पर भी लगातार निवेश करना होगा। एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी यदि सही तकनीक, उचित प्रशिक्षण और वैज्ञानिक निगरानी से वंचित रह जाए तो उसकी क्षमता पूरी तरह सामने नहीं आ सकती। SAI की प्रशिक्षण व्यवस्था में पहले से ही वैज्ञानिक प्रशिक्षण, प्रतियोगिता अनुभव, चिकित्सा और अन्य सहायता का प्रावधान है। चुनौती इन सुविधाओं की पहुंच को अधिक व्यापक और समान बनाना है। महिला खिलाड़ियों की बढ़ती भूमिका एशियन गेम्स में भारतीय महिला खिलाड़ियों की उपलब्धियां खेल व्यवस्था में आए बदलाव का एक महत्वपूर्ण पक्ष हैं। क्रिकेट से लेकर तीरंदाजी, मुक्केबाजी, कुश्ती और अन्य खेलों तक भारतीय महिला खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी क्षमता दिखाई है। अब जरूरत यह सुनिश्चित करने की है कि लड़कियों को स्कूल स्तर से ही सुरक्षित खेल वातावरण, प्रशिक्षित महिला कोच, आवश्यक सुविधाएं और परिवार तथा समाज का सहयोग मिले। महिला खिलाड़ियों के लिए खेल और शिक्षा के बीच संतुलित व्यवस्था भी लंबे करियर के लिए महत्वपूर्ण है।

सूखा, किसान और राहत:राज्यों की मांगों के बीच आपदा प्रबंधन की नई कसौटी

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com किसान के लिए सूखा केवल बारिश की कमी का नाम नहीं है। यह खेत में खड़ी फसल, पशुधन, परिवार की आय, पेयजल, कर्ज की क्षमता और पूरे ग्रामीण अर्थतंत्र पर एक साथ पड़ने वाला संकट है। कर्नाटक में मौजूदा सूखे की स्थिति ने इस चुनौती को फिर राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में ला दिया है। राज्य सरकार के अनुसार 217 तालुकों को सूखा प्रभावित घोषित किया जा चुका है और 177 तालुकों में नुकसान का आकलन करीब 46,324.50 करोड़ रुपये किया गया है। राज्य ने राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (एनडीआरएफ) के तहत केंद्र से 7,142.64 करोड़ रुपये की सहायता मांगी है। इसी बीच केंद्र की अंतर—मंत्रालयी टीम राज्य में जमीनी स्थिति का आकलन कर रही है। यह स्थिति राहत के तत्काल प्रश्न के साथ एक बड़ा सवाल भी सामने रखती है क्या भारत की आपदा प्रबंधन व्यवस्था हर बार संकट आने के बाद राहत देने तक सीमित रहेगी या सूखे को कृषि और जल नीति की दीर्घकालिक चुनौती के रूप में भी देखा जाएगा? राहत जरूरी, लेकिन समय पर राहत उससे भी ज्यादा जरूरी आपदा के समय सरकारी सहायता की उपयोगिता उसकी राशि के साथ—साथ उसकी गति पर भी निर्भर करती है। फसल नष्ट होने के बाद किसान को अगले मौसम तक इंतजार नहीं कराया जा सकता। बीज,



के तहत अतिरिक्त सहायता की मांग की जा रही है। केंद्रीय टीम का जमीनी आकलन इसी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ऐसी परिस्थितियों में केंद्र और राज्य के बीच आंकड़ों, मानकों और प्रक्रियाओं पर मतभेद हो सकते हैं, लेकिन राहत की अंतिम कसौटी किसान तक सहायता पहुंचना होनी चाहिए। वैज्ञानिक आकलन आवश्यक है, मगर आकलन पूरा होने और राहत मिलने के बीच अनावश्यक देरी किसान के संकट को और बढ़ा सकती है। सूखे का हिसाब केवल फसल नुकसान से नहीं सूखे का वास्तविक आर्थिक प्रभाव खेत में नष्ट हुई फसल से कहीं बड़ा होता है। खेती प्रभावित होने पर

तालुकों के लिए 46,324.50 करोड़ रुपये के नुकसान का अनुमान प्रस्तुत किया है। आगे के आकलन में यह आंकड़ा बढ़ने की संभावना भी राज्य सरकार की ओर से जताई गई है। इसलिए भविष्य की आपदा नीति में नुकसान का आकलन बहुआयामी होना चाहिए। फसल, पशुधन, पेयजल, रोजगार और ग्रामीण आय पर पड़े प्रभाव को एक साथ देखा जाए तो राहत नीति अधिक वास्तविक और प्रभावी बन सकती है। पानी की कमी का समाधान बारिश के भरोसे नहीं बारिश की अनिश्चितता अब कृषि नीति के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में शामिल है। ऐसे में केवल अच्छी बारिश

मतदाता सूची का शुद्धिकरण बनाम मताधिकार की सुरक्षा: SIR पर भरोसा कैसे कायम हो?

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com लोकतंत्र की सबसे बुनियादी शर्त है कि पात्र नागरिक को मतदान का अधिकार मिले और मतदाता सूची विश्वसनीय रहे। इसी कारण मतदाता सूची का नियमित पुनरीक्षण चुनावी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन जब बड़े पैमाने पर मतदाता सूची में बदलाव होता है, तब एक दूसरा प्रश्न भी उत्तनी ही गंभीरता से सामने आता है क्या किसी अपात्र नाम को हटाने की प्रक्रिया में कोई पात्र नागरिक अनजाने में सूची से बाहर तो नहीं हो गया? विशेष गहन पुनरीक्षण यानी SIR को लेकर देश में यही बहस तेज है। निर्वाचन आयोग ने 20 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में SIR पूरा होने के बाद अब उन पात्र मतदाताओं को सूची में शामिल करने के लिए विशेष अभियान चलाने का निर्देश दिया है, जिनके नाम छूट गए हैं। आयोग के अनुसार पहले की मतदाता सूची और वर्तमान सूची का मिलान किया जाएगा, बूथ लेवल अधिकारी घर—घर जाकर सत्यापन करेंगे और पात्र पाए जाने पर Form—6 के माध्यम से नाम जोड़ने में सहायता करेंगे। मतदाता सूची की शुद्धता क्यों



नाम छूट जाने पर पात्र नागरिक बाद में भी नामांकन के लिए आवेदन कर सकता है। विशेष अभियान में पहले से सूचीबद्ध रहे लेकिन वर्तमान सूची में नहीं मिलने वाले मतदाताओं के साथ—साथ पहली बार मतदान करने वाले और युवा मतदाताओं पर भी ध्यान दिया जाएगा। BLO को पुराने और वर्तमान रिकॉर्ड की तुलना करने, संबंधित मतदाताओं की स्थिति की जानकारी लेने और पात्र लोगों को Form—6 भरने में सहायता करने की जिम्मेदारी दी गई है। बूथ स्तर पर तैयार सूचियां राजनीतिक दलों के बूथ लेवल एजेंटों और संबंधित निर्वाचन अधिकारियों के साथ साझा करने की भी निर्देश दिया गया है। यह व्यवस्था तभी प्रभावी होगी जब इसकी जानकारी वास्तव में उन नागरिकों तक पहुंचे जिनका नाम सूची से बाहर हुआ है। आंकड़ों को प्रामाज्ञा की जरूरी SIR को लेकर सार्वजनिक चर्चा में बड़ी संख्या में कहा है कि मतदाता पंजीकरण एक निरंतर प्रक्रिया है और SIR के दौरान

की प्रतीक्षा करना पर्याप्त रणनीति नहीं हो सकती। जल संरक्षण, तालाबों का पुनर्जीवन, भूजल तमबीतहम, रूखम सिंचाई, वर्षाजल संचयन और स्थानीय जल स्रोतों का संरक्षण दीर्घकालिक योजना का हिस्सा होना चाहिए। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां लगातार वर्षा का स्वरूप बदल रहा है, खेती की योजना उपलब्ध जल और मिट्टी की नमी को ध्यान में रखकर बनानी होगी। हाल में केंद्र की ओर से भी राज्यों को रबी फसल योजना तैयार करते समय जल उपलब्धता और मिट्टी की नमी को ध्यान में रखने तथा दलहन और तिलहन जैसी फसलों को प्राथमिकता देने की सलाह दी गई है। फसल विविधीकरण बने मजबूरी नहीं, योजनाबद्ध विकल्प एक ही प्रकार की अधिक पानी मांगने वाली फसल पर अत्यधिक निर्भरता सूखे के समय जोखिम बढ़ा सकती है। इसका अर्थ यह नहीं कि किसानों को बिना बाजार और आय की सुरक्षा के फसल बदलने के लिए कहा जाए। फसल विविधीकरण तभी सफल होगा जब उसके साथ उपयुक्त बीज, तकनीकी सलाह, सिंचाई व्यवस्था, बाजार, न्यूनतम समर्थन और खरीद की विश्वसनीय व्यवस्था भी हो। किसान के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि कम पानी वाली फसल अपनाने पर उसकी आय कितनी सुरक्षित रहेगी। इसलिए जल संरक्षण और फसल विविधीकरण को बाजार नीति से अलग करके नहीं

देखा जा सकता। फसल बीमा में भरोसा और गति जरूरी सूखे के जोखिम से निपटने में फसल बीमा एक महत्वपूर्ण सुस्सा कवच हो सकता है। लेकिन किसान के लिए बीमा तभी उपयोगी है जब नुकसान का आकलन पारदर्शी हो और दावा समय पर मिले। केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना में तकनीकी प्रक्रियाओं नुकसान आकलन और दावों के निपटारे से जुड़ी व्यवस्थाओं में बदलाव किए हैं। तकनीक का इस्तेमाल बढ़ने से आकलन अधिक तेज और सटीक बनाने का अवसर है। अब जरूरत यह सुनिश्चित करने की है कि तकनीकी सुधार का लाभ कागजों तक सीमित न रहे, बल्कि वास्तविक प्रभावित किसान तक पहुंचे। आपदा प्रबंधन से आगे जलवायु अनुकूल

कृषि की जरूरत हर साल सूखा पड़ने के बाद राहत की घोषणा करना स्थायी समाधान नहीं है। भारत को ऐसी कृषि व्यवस्था की ओर बढ़ना होगा जो वर्षा की अनिश्चितता और तापमान में बदलाव जैसी परिस्थितियों का सामना कर सके। इसके लिए स्थानीय स्तर पर जल बजट, फसल योजना, सूखा पूर्व चेतावनी प्रणाली, जल—संरक्षण आधारित खेती और किसान प्रशिक्षण को मजबूत करना होगा। ग्राम पंचायत से लेकर जिला स्तर तक उपलब्ध जल और संभावित फसल जरूरत का वैज्ञानिक आकलन

किया जा सकता है। सम्पादकीय दृष्टि कर्नाटक का मौजूदा सूखा केवल एक राज्य का प्रशासनिक विषय नहीं है। यह भारत के सामने खड़ी उस चुनौती का उदाहरण है जिसमें खेती, जल, मौसम और ग्रामीण अर्थव्यवस्था एक—दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच राहत राशि को लेकर संवाद और आकलन अपनी जगह आवश्यक है। लेकिन किसान की नजर में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संकट को घड़ी में व्यवस्था कितनी जल्दी और कितनी पारदर्शिता से उसके साथ खड़ी होती है। राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर वैज्ञानिक आंकड़ों, स्पष्ट मानकों और समयबद्ध सहायता को प्राथमिकता देना इस व्यवस्था की विश्वसनीयता के लिए जरूरी है। निष्कर्षतः, सूखे का स्थायी समाधान केवल राहत राशि में नहीं है। राहत तत्काल जीवन और आजीविका बचाती है, जबकि जल प्रबंधन, फसल विविधीकरण, सिंचाई, बीमा और वैज्ञानिक कृषि व्यवस्था भविष्य के संकट का प्रभाव कम करती है। आज आवश्यकता ऐसी नीति की है जो किसान को सूखे के बाद राहत पाने वाला लाभार्थी नहीं, बल्कि जल और कृषि सुरक्षा की दीर्घकालिक योजना का केंद्रीय भाग माने। तभी आपदा प्रबंधन वास्तव में राहत व्यवस्था से आगे बढ़कर टिकाऊ ग्रामीण विकास का आधार बन सकेगा।

आंकड़ा तथा Form—6 आवेदनों के निपटारे की समन्वयीमा सार्वजनिक की जा सकती है। निर्वाचन आयोग के नागरिक सेवा पोर्टल पर मतदाता सूची में नाम खोजने, Form—6 के माध्यम से नए पंजीकरण, आवेदन की स्थिति देखने, ठरु से संपर्क करने और अपील जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। लेकिन डिजिटल सुविधा के साथ यह भी जरूरी है कि जिन नागरिकों की डिजिटल पहुंच सीमित है उन्हेंऑफलाइन सहायता

आसानी से मिले। सम्पादकीय दृष्टि SIR के संदर्भ में मूल प्रश्न किसी एक संस्था, दल या समूह के पक्ष—विपक्ष से आगे का है। प्रश्न यह है कि भारत की मतदाता सूची कितनी सटीक, समावेशी और नागरिकों के लिए सुलभ है। एक ओर फर्जी, मृत, दोहरे या स्थानांतरित मतदाता प्रविष्टियों को हटाना चुनावी सूची की विश्वसनीयता के लिए आवश्यक है। दूसरी ओर किसी पात्र नागरिक का नाम गलती से हट जाना उसके लोकतांत्रिक अधिकार पर सीधा प्रभाव ड़ाल सकता है। इसलिए दोनोंउद्देश्यों के बीच संतुलन ही पुनरीक्षण की सफलता का वास्तविक पैमाना होना चाहिए। इस दिशा में विशेष अभियान एक सुधारात्मक अवसर उपलब्ध कराता है।

पेट्रोल–डीजल की कीमतों का झटका:वैश्विक तेल संकट से भारत की ऊर्जा सुरक्षा तक

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव आम उपभोक्ता के लिए केवल पेट्रोल पंप पर बड़े हुए बिल का मामला नहीं होता। इसका संबंध परिवहन, माल ढुलाई, कृषि, उद्योग, घरेलू बजट और अंततः अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की लागत से जुड़ता है। ऐसे समय में जब अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार में कच्चे तेल और रिफाईंड पेट्रोलिएम उत्पादों की कीमतों पर दबाव बना हुआ है, नायरा एनर्जी द्वारा पेट्रोल में 5 रुपये और डीजल में 3 रुपये प्रति लिटर की बढ़ोतरी ने ऊर्जा सुरक्षा से जुड़े पुराने प्रश्नों को फिर सामने ला दिया है। नायरा एनर्जी ने 3 अक्टूबर से अपने 7,108 ईंधन केंद्रों पर यह मूल्य वृद्धि लागू की है। रिपोर्ट के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल और रिफाईंड उत्पादों की बढ़ती लागत ने निजी ईंधन खुदरा कारोबार पर दबाव बढ़ाया है। इससे पहले कंपनी ने मार्च में भी इसी अनुपात में कीमतें बढ़ाई थीं और अंतरराष्ट्रीय कीमतों में नरमी आने के बाद जुलाई में उस बढ़ोतरी को वापस लिया था। तेल की कीमत सिर्फ पेट्रोल पंप की कहानी नहीं ईंधन महंगा होने का प्रभाव सबसे पहले वाहन चालकों को दिखाई देता है, लेकिन इसकी आर्थिक श्रृंखला काफी लंबी होती



व्यावसायिक गतिविधियों में होता है। ट्रकों की परिचालन लागत बढ़ने पर उसका असर माल ढुलाई की कीमतों पर पड़ सकता है। इसी तरह कृषि क्षेत्र में डीजल सिंचाई पंपों और मशीनरी से जुड़ा महत्वपूर्ण ईंधन है। इसलिए पेट्रोल–डीजल की कीमतों को केवल उपभोक्ता मूल्य के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। ईंधन लागत में बदलाव का असर उत्पादन और वितरण की पूरी

श्रृंखला पर पड़ सकता है। हालांकि अंतिम प्रभाव इस बात पर भी निर्भर

कार्यान्वयन मंत्रालय की Energy Statistics India 2025 के



करता है कि वैश्विक कच्चे तेल की कीमतें कितने समय तक ऊंचे स्तर पर रहती हैं और घरेलू बाजार में कंपनियों तथा सरकार किस तरह कीमतों को समायोजित करती हैं। भारत की बड़ी चुनौती आयात पर निर्भरता भारत दुनिया की बड़ी ऊर्जा उपभोक्ता अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है और घरेलू जरूरतों के लिए कच्चे तेल के आयात पर भारी निर्भरता रखता है। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम

में कच्चे तेल की कीमत अचानक बढ़ती है, तो आयात बिल पर दबाव बढ़ सकता है। दूसरी ओर, वैश्विक कीमतों में कमी का लाभ घरेलू उपभोक्ताओं तक कितनी तेजी से पहुंचेगा, यह भी मूल्य निर्धारण की व्यवस्था और कंपनियों की लागत संरचना पर निर्भर करता है। निजी और सरकारी कंपनियों की अलग—अलग स्थिति मौजूदा परिस्थिति में निजी और सरकारी ईंधन खुदरा कंपनियों की मूल्य नीति भी चर्चा में है। रिपोर्ट के अनुसार सरकारी तेल विपणन कंपनियां ने हालिया वैश्विक लागत दबाव के बावजूद सामान्य खुदरा पेट्रोल–डीजल की कीमतों में नायरा जैसी समान वृद्धि नहीं की है। इससे अलग—अलग कंपनियों के पेट्रोल पंपों पर कीमतों में अंतर की स्थिति बन सकती है। 1 अक्टूबर को सरकार ने निजी ईंधन खुदरा कंपनियों को पेट्रोल–डीजल की बिक्री सीमित नहीं करने का निर्देश देने की बात कही थी। यह घटनाक्रम बताता है कि ईंधन बाजार में कीमत, आपूर्ति और कंपनियों की आर्थिक स्थितिकृतीनों एक—दूसरे से जुड़े हुए हैं। यहां नीति की चुनौती दोहरी है। उपभोक्ता को पर्याप्त और निबांध ईंधन मिले तथा साथ ही ईंधन विपणन कंपनियों के लिए ऐसा कारोबारी वातावरण हो जिसमें आपूर्ति

व्यवस्था लंबे समय तक टिकाऊ बनी रहे। ऊर्जा सुरक्षा का मतलब केवल तेल का भंडार नहीं ऊर्जा सुरक्षा का अर्थ यह नहीं कि देश के पास केवल पर्याप्त कच्चा तेल उपलब्ध हो। इसके कई आयाम हैं आयात स्रोतों का विविधीकरण, रणनीतिक भंडार, घरेलू उत्पादन, रिफाइनिंग क्षमता, वैकल्पिक ईंधन, नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता। भारत के पास बड़ी रिफाइनिंग क्षमता है और वह पेट्रोलिएम उत्पादों का निर्यात भी करता है। लेकिन कच्चे तेल की ऊंची आयात निर्भरता बनी हुई है। इसलिए घरेलू रिफाइनिंग क्षमता मजबूत होने के बावजूद वैश्विक कच्चे तेल बाजार की अस्थिरता से पूरी तरह अलग रहना संभव नहीं है। विकल्पों की ओर बढ़ना समय की मांग ऊर्जा सुरक्षा की दीर्घकालिक रणनीति में पेट्रोल और डीजल के विकल्पों को भी पर्याप्त महत्व देना होगा। इलेक्ट्रिक वाहन, सीएनजी, बायोगैस, इथेनॉल, हाइड्रोजन और अन्य वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत परिवहन क्षेत्र की निर्भरता को धीरे—धीरे विविध बना सकते हैं। पेट्रोलिएम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ के अनुसार जुलाई 2026 तक देश में 29,503 खुदरा केंद्रों पर इसी चार्जिंग और 8,160 चुनौती केंद्रों पर सीएनजी/सीबीजी जैसी कारोबारी वातावरण हो जिसमें आपूर्ति

थी। यह बदलाव ऊर्जा व्यवस्था में विविधता की दिशा में एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। हालांकि वैकल्पिक ऊर्जा का विस्तार केवल वाहन बदलने से पूरा नहीं होगा। चार्जिंग नेटवर्क, बिजली की विश्वसनीय उपलब्धता, बैटरी निर्माण, सार्वजनिक परिवहन और स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन को भी समानांतर रूप से विकसित करना होगा। उपभोक्ता हित और बाजार वास्तविकता के बीच संतुलन ईंधन कीमतों को लेकर सरकार के सामने हमेशा एक कठिन संतुलन रहता है। एक ओर उपभोक्तओं पर तत्काल बोझ कम रखना जरूरी है, दूसरी ओर तेल कंपनियों की लागत और आपूर्ति व्यवस्था को लंबे समय तक दबाव में रखना भी व्यावहारिक नहीं है। इसलिए मूल्य निर्धारण में पारदर्शिता महत्वपूर्ण है। उपभोक्ता को यह समझ में आना चाहिए कि अंतरराष्ट्रीय कीमतों, विनियम दर, करों और अन्य लागतों का घरेलू कीमत पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। इसी तरह कीमत घटने का भी परिस्थितियों में उसका लाभ उपभोक्ताओं तक किस प्रकार पहुंचेगा, इसकी स्पष्ट व्यवस्था भरोसा बढ़ा सकती है। सम्पादकीय दृष्टि नायरा एनर्जी की मौजूदा मूल्य वृद्धि को केवल एक कंपनी का व्यावसायिक निर्णय मानकर छोड़

देना ऊर्जा नीति के व्यापक प्रश्न को नजरअंदाज करना होगा। इसी तरह हर मूल्य वृद्धि को केवल महंगाई के नजरिये से देखना भी पूरी तस्वीर नहीं देता। इसके पीछे अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतें, भू—राजनीतिक परिस्थितियां, रिफाईंड उत्पादों की लागत, आयात निर्भरता और घरेलू बाजार की संरचना जैसे अनेक कारक हैं। भारत के लिए दीर्घकालिक रास्ता ऐसा होना चाहिए जिसमें उपभोक्ता हित, ऊर्जा कंपनियों की वित्तीय स्थिरता और राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा के बीच संतुलन कायम रहे। इसके लिए आयात स्रोतों का विविधीकरण, रणनीतिक भंडारण, घरेलू ऊर्जा उत्पादन, सार्वजनिक परिवहन, वैकल्पिक ईंधन और नवीकरणीय ऊर्जा में लगातार निवेश आवश्यक होगा। निष्कर्षतः, पेट्रोल–डीजल की कीमतों में आज का बदलाव हमें कल की ऊर्जा नीति पर सोचने का अवसर देता है। भारत की वास्तविक ऊर्जा सुरक्षा तब मजबूत होगी, जब अंतरराष्ट्रीय तेल बाजार में किसी भी बड़े उतार—चढ़ाव का असर अर्थव्यवस्था और आम नागरिक पर सीमित रखा जा सके। पेट्रोल पंप की कीमत से आगे बढ़कर आत्मनिर्भर, विविध और टिकाऊ ऊर्जा व्यवस्था की दिशा में निरंतर कदम ही इस चुनौती का दीर्घकालिक उत्तर हो सकते हैं।

को सम्मानित किया। कार्यक्रम की प्रस्थानीय समिति में मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार, पूर्व मुख्यमंत्री एवं AICC कार्यसमिति सदस्य सिद्धारमैया और डॉ.के. हरिप्रसाद के साथ सम्मानित कार्यकर्ता मौजूद रहे। गांधी जयंती कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार, पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया, AICC उपाध्यक्ष वी.आर. सुदर्शन सहित पार्टी के वर्तमान एवं पूर्व अध्यक्ष, विधायक, पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे। गांधी जयंती के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में सार्वजनिक स्वच्छता व्यवस्था में योगदान देने वाले नागरिक कर्मियों के प्रति सम्मान व्यक्त किया गया। मुख्यमंत्री शिवकुमार ने भी बेंगलुरु में गांधी जयंती से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लिया और सफाई कर्मियों का सम्मान किया। महात्मा गांधी की 157वीं और लाल बहादुर शास्त्री की 122वीं जयंती 2 अक्टूबर को देशभर में मनाई गई। दोनों नेताओं के जीवन, विचारों और सार्वजनिक जीवन में उनके योगदान को इस अवसर पर याद किया गया। KPCC के भारत जोड़ो भवन में आयोजित समारोह में पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं की मौजूदगी के बीच नागरिक कर्मियों का सम्मान कार्यक्रम का प्रमुख हिस्सा रहा। स्वच्छता एवं नागरिक सेवाओं से जुड़े कर्मियों की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्हें सार्वजनिक सम्मान दिया गया। गांधी जयंती के अवसर पर बेंगलुरु में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में महात्मा गांधी के विचारों, शांति और सामाजिक सद्भाव के संदेश को भी प्रमख्यात की गई।

